पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन : भारतीय संस्कृति और मानव-केंद्रित विकास की दृष्टि

डॉ. सपना शर्मा

भारत की सांस्कृतिक विरासत का मूल आधार विविधता में एकता की भावना है, जहाँ असंख्य भाषाएँ और साहित्यिक परंपराएँ भारतीय जीवन-मूल्यों की अभिव्यक्ति हैं। औपनिवेशिक काल के पश्चात अंग्रेज़ी के प्रभुत्व ने भारतीय भाषाओं को हाशिए पर पहुँचा दिया, तब पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने "एकात्म मानववाद" के माध्यम से राष्ट्र पुनर्निर्माण की वैचारिक दिशा प्रदान की। उनका मानना था कि भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति की आत्मा है। उन्होंने स्वदेशी भाषा में शिक्षा और अभिव्यक्ति को अनिवार्य बताया, क्योंकि विदेशी भाषा व्यक्ति को अपनी जड़ों से काट देती है। उपाध्याय जी के विचार आज की मातृभाषा-आधारित "राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020" के संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक हैं, जो इस बात को रेखांकित करते हैं कि भारतीय भाषाएँ ज्ञान, विज्ञान और दर्शन की सशक्त वाहक हैं।

1. **एकात्म मानव दर्शन — भारतीय जीवन दृष्टि का समग्र सिद्धांत**

लंबे समय की पराधीनता के बाद जब स्वतंत्र भारत अपने प्राचीन संस्कारों, मूल्यों और आदर्शों से दूर होता जा रहा था, तब पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय चिंतन पर आधारित एक नया जीवन-दर्शन प्रस्तुत किया, जिसे उन्होंने "एकात्म मानव दर्शन" नाम दिया। इस दर्शन में उन्होंने मानव और प्रकृति के बीच निहित एकात्म संबंध को रेखांकित किया। उपाध्याय जी के अनुसार, मानव जीवन के विभिन्न पक्षों में भले ही विविधता दिखाई देती हो, परंतु यह विविधता उसी आंतरिक एकता की अभिव्यक्ति है जो समस्त सृष्टि को जोड़ती है। यही कारण है कि जीवन के सभी अंगों में पारस्परिक अनुकूलता और पूरकता विद्यमान है। उनके मतानुसार मनुष्य केवल शरीर या बुद्धि नहीं, बल्कि शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का संपूर्ण रूप है। अतः मनुष्य का वास्तविक विकास तभी संभव है जब उसके भौतिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक सभी पक्षों का संतुलित और समग्र विकास हो। यही समग्रता एकात्म मानव दर्शन का मूल सार है।

2. **भारतीय संस्कृति और आदर्शों पर आधारित राष्ट्रनिर्माण की दृष्टि**

भारत की वास्तविक उन्नति तभी संभव है जब उसका निर्माण उच्च आदर्शों और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर किया जाए। भारतीय समाज तभी प्रगति कर सकता है जब वह अपने प्राचीन आदर्शों का अनुसरण करते हुए जीवन में नैतिकता, कर्तव्यबोध और मानवता को स्थान दे। धीरज सिंह के अनुसार, "भारतवर्ष अपनी महान सभ्यता और संस्कृति के कारण विश्व मंच पर सदैव प्रतिष्ठित रहा है तथा इसकी तेजस्वी परंपराओं ने समय-समय पर पूरे विश्व को आलोकित किया है। अनेक युगपुरुषों और महान विभूतियों ने जन्म लेकर इन परंपराओं को समृद्ध किया और समाज तथा राष्ट्र को दिशा प्रदान की।"

इसी विचार को आगे बढ़ाते हुए पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने कहा कि भारत को समझने के लिए उसे राजनीति या अर्थशास्त्र के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से देखना आवश्यक है। उनके अनुसार, भारतीय संस्कृति में राज्य जीवन का केंद्र नहीं है, बल्कि धर्म और संस्कृति ही जीवन के वास्तविक आधार हैं। इस प्रकार

उपाध्याय जी ने धर्म, संस्कृति और आदर्शों को राष्ट्र के नैतिक पथप्रदर्शक के रूप में प्रस्तुत किया, जो भारत को आत्मिक रूप से सशक्त और विश्व में गौरवशाली बना सकते हैं।

3. **एकात्म मानव दर्शन — भौतिक और आध्यात्मिक विकास का समन्वित दृष्टिकोण**

एकात्म मानव दर्शन मानववाद की भावना को अपने केंद्र में रखता है और यह मानता है कि मानव की सच्ची प्रगति तभी संभव है जब भौतिक उन्नति के साथ-साथ उसकी आध्यात्मिक चेतना का भी विकास हो। पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार, यह दर्शन व्यक्ति, समाज और समस्त सृष्टि के एकात्म संबंध पर आधारित है। इसका उद्देश्य केवल मानव के भौतिक सुखों की प्राप्ति नहीं, बल्कि उसके भीतर निहित आध्यात्मिक शक्तियों का संवर्धन भी है। यह विचारधारा व्यक्ति के व्यवहार को 'अहं' से आगे बढ़ाकर 'वयम्' — अर्थात् समष्टि के हित — की दिशा में विस्तारित करती है। इस प्रकार, एकात्म मानव दर्शन का लक्ष्य केवल व्यक्ति के कल्याण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह संपूर्ण मानवता और सृष्टि के कल्याण की दिशा में अग्रसर होता है। उपाध्याय जी के मतानुसार, भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही विकास जीवन के अभिन्न अंग हैं, जो मिलकर मानव जीवन के समग्र संतुलन और सामंजस्य का आधार बनाते हैं।

4. **वसुधैव कुटुंबकम् और एकात्म मानव दर्शन की वैश्विक दृष्टि**

"वसुधैव कुटुंबकम्" — अर्थात सम्पूर्ण पृथ्वी एक परिवार है — यह विचार भारतीय संस्कृति की सार्वभौमिक मानवतावादी दृष्टि का प्रतीक है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने इसी भाव को अपने एकात्म मानव दर्शन में व्यावहारिक रूप से प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, यह दर्शन प्रत्येक राष्ट्र को अपनी प्रकृति और क्षमता के अनुसार स्वतंत्र रूप से विकास करने की प्रेरणा देता है। जिस प्रकार एक व्यक्ति अपने कर्म और गुणों के अनुसार आगे बढ़कर समाज की उन्नति में योगदान देता है, उसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र को भी मानवता का अभिन्न अंग मानते हुए समष्टि कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए। उपाध्याय जी का मानना था कि जब राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता बनाए रखते हुए एक-दूसरे के पूरक बनेंगे, तब ही संपूर्ण मानवता का विकास संभव होगा। इस प्रकार, उनका एकात्म मानववाद भारत की प्राचीन अवधारणाओं — "वसुधैव कुटुंबकम्" और "सर्वे भवन्तु सुखिनः" — का आधुनिक और व्यावहारिक रूप है, जो विश्व में सहयोग, समरसता और शांति की भावना को सशक्त करता है।

5. **दीनदयाल उपाध्याय का मानव-केंद्रित आर्थिक चिंतन और सात "एम" सिद्धांत**

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि भारत की औद्योगिक और आर्थिक नीतियाँ केवल उत्पादन और लाभ के सिद्धांतों पर नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों और सामाजिक समरसता पर आधारित होनी चाहिए। वे सुझाव देते हैं कि औद्योगिक नीति के निर्माण में श्री एम. विश्वेश्वरैया द्वारा प्रतिपादित सात "एम" सिद्धांतों — मनुष्य (Man), वस्तु (Material), मुद्रा (Money), यंत्र (Machine), प्रबंधन (Management), प्रवृत्ति शक्ति (Motive Power) और बाजार (Market) — को समान रूप से महत्व दिया जाना चाहिए। इन सभी तत्वों में संतुलन और परस्पर सहयोग के बिना कोई भी आर्थिक व्यवस्था दीर्घकालीन रूप से स्थिर नहीं रह सकती, क्योंकि ये एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं।

उपाध्याय जी का आर्थिक दर्शन पश्चिमी “Survival of the Fittest” दृष्टिकोण से भिन्न है, जो स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा पर आधारित है। भारतीय परंपरा का मूल भाव “सबका उत्थान” और “जो कमाएगा वह खिलाएगा” की भावना में निहित है। उनका मानना था कि यदि अर्थव्यवस्था को वास्तव में मानव-केन्द्रित बनाना है, तो “जो कमाएगा वही खाएगा” के स्थान पर “जो खाएगा, वही कमाएगा” का भाव अपनाना आवश्यक है। इस दृष्टिकोण में प्रत्येक व्यक्ति को श्रम और उत्पादन की प्रक्रिया से जोड़ने पर बल दिया गया है, जिससे सामाजिक न्याय और आर्थिक समानता दोनों साकार हो सकें।

मार्क्सवादी विचारधारा जहाँ मनुष्य को मात्र भौतिक तत्वों की उपज मानती है, वहीं दीनदयाल उपाध्याय का अर्थचिंतन मनुष्य को आत्मा, संस्कृति और नैतिकता से युक्त सजीव तत्व के रूप में देखता है। इस प्रकार, उनका एकात्म मानव दर्शन आर्थिक विकास को मानवता, नैतिकता और सांस्कृतिक चेतना से जोड़ने वाली एक समग्र और स्थायी व्यवस्था का मार्ग प्रशस्त करता है।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय का समग्र चिंतन भारतीय संस्कृति, परंपरा और मानवीय मूल्यों पर आधारित एक जीवंत राष्ट्रदृष्टि प्रस्तुत करता है। उन्होंने स्वतंत्र भारत को पश्चिमी विचारधाराओं की नकल से हटाकर अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का संदेश दिया। उनके एकात्म मानव दर्शन का मूल भाव यह है कि व्यक्ति, समाज, प्रकृति और विश्व — सभी एक ही चेतना के विविध रूप हैं, जिनमें संतुलन और समरसता स्थापित करना ही जीवन का सर्वोच्च्य उद्देश्य है।

उनके अनुसार, भारत की वास्तविक शक्ति उसकी संस्कृति, भाषा और जीवन-मूल्यों में निहित है। जब समाज अपनी मातृभाषा और परंपराओं से जुड़ा रहेगा, तभी वह आत्मनिर्भर और सशक्त बन सकेगा। “वसुधैव कुटुंबकम्” की भावना के माध्यम से उन्होंने विश्व-मानवता की एकता और सार्वभौमिक बंधुत्व का मार्ग दिखाया। उनका यह विश्वास था कि प्रत्येक राष्ट्र अपनी स्वतंत्र पहचान के साथ मानवता की समष्टि में योगदान दे सकता है।

आर्थिक क्षेत्र में भी उन्होंने मानव-केंद्रित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जहाँ विकास का अर्थ केवल उत्पादन या लाभ नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज दोनों के कल्याण से है। उन्होंने श्री विश्वेश्वरैया के “सात एम” सिद्धांतों के माध्यम से संतुलित औद्योगिक नीति का सुझाव दिया और यह स्पष्ट किया कि भौतिक प्रगति के साथ आध्यात्मिक उत्थान भी अनिवार्य है।

अतः दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानव दर्शन केवल एक वैचारिक सिद्धांत नहीं, बल्कि एक जीवन-पद्धति है — जो व्यक्ति को समाज से, समाज को संस्कृति से और संस्कृति को समग्र मानवता से जोड़ता है। यह भारतीय संस्कृति की उस शाश्वत जीवन-दृष्टि का आधुनिक रूप है, जो “सर्वे भवन्तु सुखिनः” और “वसुधैव कुटुंबकम्” की भावना के साथ विश्व में शांति, सहयोग और समरसता की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करता है।

संदर्भ सूची

1. नेने, विनायक वासुदेव, पं० दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन, एकात्म मानव दर्शन : नई दिल्ली, सुरुचि प्रकाशन, प्रथम संस्करण-1990
2. सिंह धीरज, दीनदयाल शोध संस्थान के शैक्षिक कार्यों का गांधी जी के शैक्षिक विचारों के परिपेक्ष्य में मूल्यांकन, आराधना प्रकाशन: कानपुर,
3. शर्मा महेश चंद्र (2014), पंडित दीनदयाल उपाध्याय आधुनिक भारत के निर्माता, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार: नई दिल्ली, पृष्ठ–123
4. नेने, विनायक वासुदेव, पं० दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन (खण्ड-2) एकात्म मानव दर्शन: नई दिल्ली, सुरुचि प्रकाशन, प्रथम संस्करण-1990
5. उपाध्याय, दीनदयाल (2008), राष्ट्र जीवन की दिशा, लोकगीत प्रकाशन: लखनऊ
6. उपाध्याय दीनदयाल (1980), भारतीय अर्थ नीति विकास की एक दिशा. लोकगीत प्रकाशन: लखनऊ
7. उपाध्याय दीनदयाल (2019) पॉलिटिकल डायरी, सुरुचि प्रकाशन: नई दिल्ली

असिस्टेंट प्रोफ़ेसर,
हिन्दी विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर